International Journal of Applied Research 2015; 1(10): 83-86

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 83-86
www.allresearchjournal.com
Received: 29-07-2015
Accepted: 25-08-2015

Dr. Sanjeet Kumar Tiwari
Assistant Professor, School of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

Dr. Jubraj Khamari
Assistant Professor, School of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

Ms. Kshipra Hadke
Research Scholar (M. Phil. Education) School of Education, MATS University, Aarang, Raipur (C.G)

Correspondence
Dr. Sanjeet Kumar Tiwari
Block no.- 21, Ashoka Ratan, Near VIP Estate, Khamardih, Shankar Nagar, Raipur, (C.G.) Pin - 492007

रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलानात्मक अध्ययन

Dr. Sanjeet Kumar Tiwari, Dr. Jubraj Khamari, Ms. Kshipra Hadke

संक्षेपिका
शिक्षा किसी भी समाज का वह बिन्दु है जिसके चारों ओर समाज विकास का चक्र घूमता है। समाज के आर्थिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक व मानसिक विकास के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा के बिना ये सब अधूरे है। शिक्षा वह क्रम है जिसके द्वारा समाज व राष्ट्र का विकास संभव है। बालक जिस वातावरण में बड़ा होता है ,वह वातावरण ज्यादातर उसकी सामाजिक बुद्धि को प्रभावित करता है। यह कारण जानने के लिए ही इस समस्या का चयन किया गया। शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विज्ञान व वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में किस सीमा तक सामाजिक बुद्धि का विकास हुआ तथा विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धि के विकास का तुलनात्मक अध्ययन ज्ञात करना ही अध्ययन का प्रयोजन है। इसके लिए शोधार्थी ने शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय के 160 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया हैं। आंकड़ों के संकलन के लिए डॉ. एन.के. चड्ढा द्वारा निर्मित 'सोशियल इन्टीलिजन्स स्केल' का उपयोग किया है एवं आवश्यक सांख्यिकीय विधि का प्रयोग समस्या के समाधान तथा निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए किया गया है। अंत में शोधार्थी के शोध द्वारा यह निष्कर्ष निकला कि विद्यार्थी चाहे वह शासकीय या अशासकीय महाविद्यालय का हो या विज्ञान संकाय का हो या वाणिज्य संकाय का हो, उसकी सामाजिक बुद्धि में अंतर नहीं पाया जाता है।

महत्वपूर्ण शब्द : शासकीय, अशासकीय, महाविद्यालय, विज्ञान संकाय, वाणिज्य संकाय, सामाजिक बुद्धि ।

1.प्रस्तावनाः

शिक्षा किसी भी समाज का वह बिन्दु है जिसके चारों ओर समाज विकास का चक्र घुमता है। समाज के आर्थिक राजनीतिक, अध्यात्मिक व मानसिक विकास के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है, शिक्षा के बिना ये सब अधूरे है। शिक्षा वह क्रम है जिसके द्वारा समाज व राष्ट्र का विकास संभव है। व्यक्ति जन्म से ही सामाजिक व असामाजिक नहीं होता है। जन्म के पश्चात् जीवन की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हुए उनका सामाजिक विकास होता है। जैसे–जैसे बालक का सामाजिक विकास होता है वैसे–वैसे उनकी सामाजिक बुद्धि का भी विकास होता है।

मनुष्य के सामाजिक प्राणी होने के कारण उसका जीवन समाज में ही संभव है तथा वह समाज में समायोजन करके और सभी से मिल जुलकर व्यवहार करके अपनी सामाजिक बुद्धि का विकास करता है। तथा शिक्षा के अभाव में बालक समाज के नियमों व उत्तरदायत्वि को समझने व उनका पालन करने में असमर्थ होता है। शिक्षा द्वारा ही वह विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन कर सामाजिक रूप से परिपक्व होता है।

शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व बौद्धिक विकास करना है। जब बालक का जन्म होता है, तब वह सर्वप्रथम अपने परिवार के सम्पर्क में आता है और यही से उसकी सामाजिक बुद्धि का विकास होना प्रारंभ होता है।बालक की सामाजिक बुद्धि को वंशानुक्रम, परिवार की स्थिति, वातावरण आदि कारक प्रभावित करते हैं। बालक जिस वातावरण में बड़ा होता है ,वह वातावरण ज्यादातर उसकी सामाजिक बुद्धि को प्रभावित करता है। अतः शोधकर्ता ने यह जानने के लिए कि शासकीय महाविद्यालय क्षेत्र का वातावरण और अशासकीय महाविद्यालय क्षेत्र का वातावरण विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि को प्रभावित करते है, पर शोध किया हैं।

2. संबंधित शोध अध्ययन

संबंधित शोध अध्ययन में आशय उन समस्त पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों, पुस्तकालयों, ज्ञानकोषों से एकत्र की गई जानकारियाँ है, जिससे अनुसंधान की समस्याओं के समाधान, परिकल्पनाओं का निर्माण, समस्याओं से संबंधित आंकड़ो के संकलन एवं अग्रगामी अध्ययन की सुविधा प्राप्त होती है।

2.1 भारतीय पृष्ठभूमि के संदर्भ में

सास्वत् (1982) ने दिल्ली के माध्यमिक शाला के छात्रों का समायोजन मूल्य शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक बुद्धि, आर्थिक स्तर आदि का अध्ययन किया। तथा यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि लड़कों के आत्म विचार का सामाजिक समायोजन के साथ धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध पाया गया जबकि लड़कियों के आत्मविचार धनात्मक व सार्थक स्तर पर का स्वस्थ, सामाजिक भावात्मकता शाला आदि को समायोजन में सार्थक संबंध रखते है।

शर्मा (1983) ने महाविद्यालय छात्रों के विभिन्न सामाजिक आर्थिक समूहों के बुद्धि एवं समायोजन के साथ संबंध पर खोज की। इन्होंने न्यादर्श के रूप में 1000 महाविद्यालय छात्र लिये जो प्रथम वर्ष के थे एवं 20 विभिन्न महाविद्यालय जो राजस्थान सें संबंधित थे।

अस्थाना अंजु (1989) ने लखनऊ शहर के विद्यालय में पढ़ते बच्चों की सामाजिक परिपक्तवता का अध्ययन करके पाया कि जैसे–जैसे बच्चो का विकास होता है वैसे–वैसे उनकी सामाजिक परिपक्वता बढ़ती है।

भारतीय और ब्रिस्ट (2002) ने उच्चतर विद्यालयों के विद्यार्थियों के कक्षा में अनुपस्थिति के संदर्भ में पारिवारिक संबंधों की भूमिका और सामाजिक परिपक्वता का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि अनुपस्थिति छात्रों में एकाग्रता और पारिवारिक संबंधों से दूर रहने के पहलू अधिक पाई गई तथा अनुपस्थित छात्रों में एकाग्रता कम पायी गई यह छात्र छात्राओं के अपेक्षा कम सामाजिक परिपक्व पाए गए।

जैन व पटेल (2005) ने बालक बालिकाओं पर अध्ययन किया और पाया कि सभी बालक बालिकाओं में सामान्य सामाजिक परिपक्वता पायी गयी बालक जिन्होंने इस अन्वेषण में भाग लिया था उनमें सामाजिक परिपक्वता बालिकाओं की तुलना में उच्च पायी गयी।

गिर व शर्मा (2006) ने 9–12 वर्ष के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता की तुलना की। उन्होंने पाया की इस वर्ष के सभी विद्यार्थियों में सामान्य स्तर की सामाजिक परिपक्वता पाई गई। इस कार्य हेतु चुने गये छात्रों में छात्राओं कि अपेक्षा उच्च सामाजिक परिपक्वता पाई गई।

2.2 विदेशी पृष्ठभूमि के संदर्भ में :

बैली (1968) ने यह पाया कि पाँचवी कक्षा के छात्रों के समूह में मित्रता के द्वारा सामाजिक बुद्धि का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला गया कि मित्रता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध पाया गया। साथ ही ऐसी उपलब्धियों का संबंध बुद्धि के साथ भी पाया गया।

किटिंग (1978) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि सामाजिक बुद्धि एवं संवेदना के मध्य संबंध या एवं उच्च स्तर के शैक्षिक मूल्यों एवं सामाजिक योग्यता के मध्य अधिक समानता पायी गयी।

फेट्रिक्सन एवं अन्य (1984) इन्होंने सामाजिक बुद्धि का टेक्सोनामि में स्थान का अध्ययन किया जो साक्षरता के द्वारा किया गया। जिसमें ज्ञानात्मक चर के प्रकार अधिक थे। उन्होंने यह पाया कि टेक्सोनामी में सामाजिक बुद्धि की अपेक्षा ज्ञानात्मक योग्यताओं का विकास अधिक हुआ।

ब्राउन ऐन्थोनी (1990) ने सामाजिक एवं शैक्षिक बुद्धि के विषय का अध्ययन किया जहाँ उन्होंने कुल 83 लोग लिये (छात्र 83) जो कि विश्वविद्यालय के स्नातक छात्र थे। इस अध्ययन से यह पाया गया कि शैक्षिक एवं सामाजिक बुद्धि एक दूसरे पर प्रभाव डालती है और स्वमूल्यांकन सामाजिक बुद्धि एवं समूह मूल्यांकन के मध्य बहुत कम संबंध होता है।

शिमौन एम. रिड्र और केविन एन.लैन्ड (2001) सामाजिक बुद्धि और उच्च बुद्धि के बालकों पर प्रभाव। यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि सामाजिक बुद्धि और उच्च बुद्धि वाले बच्चों के लिए ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया, परन्तु उच्च बुद्धि वाले की तुलना पर सह संबंध पाया गया, परन्तु सामाजिक बुद्धि वाले बालकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

डेनिल वाक्य (2004) शैक्षिक उपलब्धि पर पैतृक प्रभाव का अध्ययन। इस अध्ययन से यह पाया गया कि जिस परिवार के लोगों में दयालुता और कोमलता होती है उनके बच्चों का स्वभाव भी वैसा ही होता है और पालक अपने बच्चों की मूल प्रवृत्तियों को बदलने में प्रेरित कर सकता है यदि बालक का पारिवारिक वातावरण सुरक्षा युक्ति है तो उनकी शैक्षिक व सामाजिक बुद्धि अच्छी होगी।

3. विधि तथा अध्ययन का प्रारूप

3.1 समस्या कथन

''रायपुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

3.2 अध्ययन का उद्देश्य

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मापन करना।

1. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान संकाय तथा वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3.3 अध्ययन की परिकल्पनाएँ

H_1 - शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_2- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

3.4 अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमा

1. अनुसंधान के लिए रायपुर क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों तक सीमित है।
2. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों का चयन किया गया है।
3. यह अध्ययन महाविद्यालय के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
4. इस अध्ययन के अंतर्गत विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
5. सामाजिक बुद्धि के मापन हेतु सामाजिक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया।

3.5 अध्ययन की विधि

शोधार्थी ने इस शोधकार्य हेतु महाविद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया हैं तथा न्यादर्श का प्रतिचयन उद्देश्य पूर्ण यादृच्छिक विधि से किया है।

3.6 अध्ययन के लिए न्यादर्श

प्रस्तुत लघु शोध में रायपुर क्षेत्र के महाविद्यालय से 2 शासकीय एवं 2 अशासकीय महाविद्यालय का चयन किया गया हैं, जिसमें से 160 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चयन किया गया हैं।

3.7 अध्ययन हेतु उपकरण एवं प्रविधि

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में सामाजिक बुद्धि के मापन हेतु डॉ. एन.के. चड्ढा द्वारा निर्मित 'सोशियल इन्टीलिजन्स स्केल' का उपयोग किया हैं।

इस अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–मूल्य का प्रयोग किया गया हैं।

3.8 उपकरण का प्रशासन

एन के चड्ढा द्वारा निर्मित प्रश्नावली शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया है। कक्षा में एकत्रित विद्यार्थियों को निम्नलिखित निर्देश देकर उत्तर देने को कहा गया।

- इस पुस्तिका में कुछ कथन है जो हमारे अहसास, व्यवहार व कार्य करने से संबंधित हैं। कृपया अपने सर्वोत्तम विकल्प को निष्ठा एवं ईमानदारी पूर्वक चिह्नित कीजिए। प्रत्येक कथन को ठीक से पढ़कर समझियें एवं उत्तर पुस्तिका में प्रत्येक कथन के आगे दिये गये तीन विकल्प में से किसी एक पर गुणा (ग) का चिन्हन लगाइयें।
- किसी भी कथन को मत छोड़ियें।
- आपके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखे जायेंगे।
- इसकी कोई समय मर्यादा निश्चित नहीं है।

3.9 उपकरण का फलांकन

इस सामाजिक बुद्धि मापनी में 8 पहलू है और कुल 66 प्रश्न दिए गए है। प्रत्येक प्रश्न हेतु तीन विकल्प निर्धारित है, जिसमें से एक विकल्प हो चुनना है। प्रत्येक विकल्प का गुण भिन्न–भिन्न है। प्रत्येक प्रश्न की गणना अलग–अलग है।

उदाहरणः 4 नम्बर के प्रश्न में तीन विकल्प है। छात्र अगर, चुनेगा, तो उसे 1 अंक मिलेगा। बी चुनेगा तो 3 अंक मिलेंगे और सी चुनेगा तो 2 अंक मिलेंगे। इस तरह 5 नंबर के प्रश्न में भी तीन विकल्प है। छात्र अगर, चुनेगा तो उसे 3 अंक मिलेंगे। बी चुनेगा तो 1 अंक मिलेगा और सी चुनेगा तो 2 अंक मिलेंगे।

इस प्रकार विद्यार्थियों द्वारा दिए गए उत्तरों के आधार पर उन्हें अंक प्रदान किये गए।

4. प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत लघुशोध समस्या शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन है। सामाजिक बुद्धि का अध्ययन करते हुए शोधकर्ता ने निम्नलिखित परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया है।

इस प्रक्रिया के अंतर्गत प्राप्त मूल आंकड़ों को व्यवस्थित रूप प्रदान कर मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी मूल्य की गणना की गयी है। इस मान की सार्थकता का स्तर देखकर परिकल्पनाओं की पुष्टि की गयी है।

H_1- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु शासकीय महाविद्यालय के 80 तथा अशासकीय महाविद्यालय के 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया एवं सामाजिक बुद्धि मापनी की सहायता से प्राप्त मूल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी मूल्य की गणना की गयी है। जिसका विवरण सारणी क्रमांक 4.1 में दिया गया है।

सारणी क्रमांक 4.1: शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि का सांख्यिकीय विवरण

क्रं.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1.	शासकीय महाविद्यालय	80	84.30	15.07	0.54
2.	अशासकीय महाविद्यालय	80	85.47	15.12	

स्वतंत्रता की कोटि $df = 158$, $p < 0.05$ सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त सारणी में यह स्पष्ट है कि शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन 84.30 तथा 15.07 व 85.47 तथा 15.12 प्राप्त हुआ तथा दोनों के मध्य '' टी मूल्य'' का मान 0.54 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता की कोटि 158 पर 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है, जो यह प्रदर्शित करता है कि हमारी परिकल्पना स्वीकृत होती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_2- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय के विज्ञान संकाय के 80 तथा वाणिज्य संकाय के 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया एवं सामाजिक बुद्धि मापनी की सहायता से प्राप्त मूल प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी मूल्य की गणना की गयी है। जिसका विवरण सारणी क्रमांक 4.2 में दिया गया है।

सारणी क्रमांक 4.2: शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान संकाय एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

क्रं.	तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1.	शासकीय महाविद्यालय विज्ञान	80	106.90	15.63	0.201
2.	अशासकीय महाविद्यालय वाणिज्य	80	105.38	14.4	

स्वतंत्रता की कोटि $df = 158$, $p < 0.05$ सार्थक अंतर नहीं है।

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के अंतर्गत शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का मध्यमान 106.90 व 105.38 है तथा प्रमाणिक विचलन 15.63 तथा 14.4 प्राप्त हुआ तथा दोनों के मध्य टी मूल्य का मान 0.201 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता की कोटि 158 सार्थकता स्तर पर 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है जो यह प्रदर्शित करता है कि हमारी परिकल्पना स्वीकृत होती है।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

5. शैक्षिक निहितार्थ

1. समाज में शिक्षा का गिरता स्तर उठाने हेतु।

2. माननीय जीवन में व्यवहारिक कार्य की अधिकता।
3. वर्तमान शिक्षा का व्यवसायिकरण करने हेतु।
4. विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास हेतु।
5. जीवन संघर्ष हेतु विद्यार्थी को पूर्ण रूप से तैयार करने के लिये।
6. व्यक्ति के आंतरिक कौशल एवं गुणों को बाहर लाने के लिये।
7. विद्यार्थियों को भी स्वयं अपनी कार्य क्षमता, कुशलता, व्यक्तिगत सामूहिक कमजोरियों के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके।

6. शोध के आधार पर प्रस्तुत सुझाव

1. परिवार के समस्त सदस्यों को बच्चों के लिए अनुकूलित वातावरण के निर्माण हेतु हर संभव प्रयास व सहायता करनी चाहिए ताकि उसकी सामाजिक बुद्धि का उचित विकास हो सके।
2. शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का स्वस्थ व उचित समायोजन होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धि का विकास हो सके।
3. परिवार व विद्यालयों में व्यक्तिगत व सामाजिक समस्याओं के निराकरण हेतु दिशा निर्देशन की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

7. निष्कर्ष

H_1- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
$df = 158 \quad p < 0.05 t = 0.54$
निष्कर्ष – अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।
H_2- शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत् विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
$df = 158 \quad p < 0.05 t = 0.201$
निष्कर्ष – अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

8. संदर्भित ग्रंथ सूची

1. गैरेट, हेनरी ई. (1948) *"शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकीय"*, कल्याणी प्रकाशन लुधियाना
2. राय, पारसनाथ (1989) *"अनुसंधान विधियाँ– अनुसंधान परिचय"*, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, पृ.53
3. श्रीवास्तव, डी.एन. (2001) *"न्यादर्श के आकार का निर्धारण अनुसंधान विधियाँ सांख्यिकीय सहित"*, कॉलेज साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृ.60
4. सिंह, अरूण कुमार (2003) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, भारतीय भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ.451
5. जैन, प्रभा व पटेल (2003) : *"ए कम्परेटिव स्ट्डी ऑफ सोशियन मैच्यूरिटी ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूट ऑन जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ साइक्रोमेट्रीक एंड एजूकेशन"*, जनवरी 2001, वाल्युम 32
6. सिंधु, बी.एस. एवं शेरगिल : *"इफेक्ट ऑफ सोशियल मेच्यूरिटी एंड टीचिंग एप्टीट्यूड ऑन जॉब सेटिस्फेक्शन ऑफ साइकोमेट्रिक एंड एजूकेशन"*, जनवरी 2001, वाल्युम 32
7. शर्मा, आर.ए. (2003) *"शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व"*, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.346
8. डॉ. अस्थाना, विपिन (2005) *"मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन"*, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ.225
9. कपिल, एच.के. (2005) *"अनुसंधान विधियाँ"*, हर प्रसाद भार्गव,पृ.38
10. शर्मा, श्वेता एवं गिर सोफिया (2006): *"सेक्स डिफरेन्स इन साोशियल मेच्यूरिटी साइकोलिग्वा"*, वाल्युम–36
11. डॉ. जैन, बी.एम., *"रिसर्च मैथ्डोलॉजी"*, रिसर्ज पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ.113
12. पाठक, पी.डी. (2006) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ. 136–138
13. शर्मा, अंजलि; शर्मा संध्या (2008) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, अनु प्रकाशन, जयपुर, पृ.289
14. प्रो. गुप्ता, रमेश (2008) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, पृ.309
15. डॉ. माथुर, एस.एस., *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ. 255–260
16. डॉ. सिंह, रामपाल (2008) *"शैक्षिक मूल्यांकन"*, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.270
17. डॉ. श्रीवास्तव, डी.एन. (2009) *"सांख्यिकीय एवं मापन"*, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ.187
18. डॉ. पाल, हंसराज; शर्मा ,मंजुलता (2009) *"मापन आंकलन एवं मूल्यांकन"*, शिप्रा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, पृ.133
19. शर्मा, शशीप्रभा; शर्मा, मधुलिका (2009) *"शिक्षा और मनोविज्ञान में मापन एवं मूल्यांकन"*, कनिष्ठ पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.201–208
20. यादव, डी.एस. (2009) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, लोकेश थानी प्रेरणा प्रकाशन, दिल्ली, पृ.150–156
21. कलश्रेष्ठ, एस.पी. (2011), *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, आर. लाल बुक डिपो मेरठ, पृ.326
22. शर्मा, आर.ए. (2012) *"शिक्षा अनुसंधान"*, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.163
23. मेहरोत्रा, आर.एन., *"शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व"*, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृ.55–65